हिन्दी दिवस विशेषांक

द ग्लोबल टाइम्स

सोमवार, सितंबर 7, 2026

हिन्दी अंतरात्मा की भाषा है

इसे भाषा कहना उसके वास्तविक विस्तार को सीमित करना होगा

अथर्व परुथी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
नौएडा, कक्षा 10 ओ (सिंक्रो)

हिन्दी में आत्मीयता का विकास है,
हर शब्द जैसे हृदय में उल्लास है,
यह भारत की आत्मा का गौरव ज्ञान है,
यह संस्कृति की भव्य पहचान है,
यह मेरा चिंतन, मेरा अभिमान है,
हिन्दी ही मेरा सच्चा सम्मान है।

हिन्दी केवल वर्णमाला और व्याकरण का संग्रह नहीं बल्कि भारत के हृदय की धड़कन है। यह मन की वीणा है जिसकी हर तार में रस, करुणा, प्रेम तथा शौर्य के स्वर निकलते हैं। यह एक साँस्कृतिक धरोहर है जिसने रामचरितमानस से लेकर छायावाद तक का सफर किया है। भारत की विविधताओं के बीच, हिन्दी ऐसी भाषा है जिसने करोड़ों लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ने का कार्य किया है। यह संवाद के साथ–साथ भारतीय जनमानस की भावनाओं, संस्कारों और संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। दुनिया भर के 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी में पढ़ाई जाती है। वैश्वीकरण और आधुनिकता के युग में 61 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी को अपनाते हैं। प्रवासन, व्यापार और मीडिया के माध्यम से इसका हमेशा प्रचलन बढ़ा है।

हिन्दी सिर्फ भाषा नहीं, अपितु एक भावनात्मक सम्प्रेषण है। जैसे– 'माँ' शब्द में जो ममता है और 'मिट्टी' शब्द में जो सुगन्ध है, वह केवल हिन्दी में ही गहराई से कही जा सकती है। हिन्दी अंतरात्मा की भाषा है, इसे एक भाषा कहना उसके वास्तविक विस्तार को सीमित करना होगा, यह भारत के प्राणों की संपदा है। हमें गर्व है कि हमारा विद्यालय आधुनिकता के साथ–साथ हिन्दी भाषा के संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है। विभिन्न सांस्कृतिक एवं शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से हिन्दी को बढ़ावा दिया जाता है। यह सब हमारे विद्यालय की प्रतिष्ठित चेयरपर्सन श्रीमती डॉ. अमिता चौहान मैडम के मार्गदर्शन में संभव हो पाता है। उनका हिन्दी भाषा के प्रति समर्पण और प्रेम हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है। मैं गर्व से इसे अपनाता हूँ, हर पल इसे गुनगुनाता हूँ। जी टी

जीवनपर्यंत शिक्षक, आजीवन विद्यार्थी

डॉ० (श्रीमती) अमिता चौहान
चेयरपर्सन

शिक्षा केवल ज्ञान का प्रसार नहीं बल्कि जीवन का रूपांतरण है। शिक्षा का लक्ष्य समग्र विकास, नैतिक मूल्यों का समावेश और युवाओं को जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बनाना है। समय के साथ छात्र कई पाठ तो भूल सकते हैं, किन्तु वे उन गुरुओं को कभी नहीं भूलते जिन्होंने उन्हें प्रेरित किया। गुरुओं के पास बच्चों के भविष्य और उनके माध्यम से राष्ट्र के भविष्य को आकार देने की शक्ति होती है। हाल ही में 5 सितंबर को हमने शिक्षक दिवस मनाया जिसमें हमने ऐमिटी के शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा रचित सर्वश्रेष्ठ निबंधों को सम्मानित किया। यह निबंध सिर्फ हमारे शिक्षकों की लेखनी ही नहीं बल्कि पढ़ाने और सिखाने को लेकर उनकी सोच, उनके जूनून का प्रतिबिम्ब है। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम कहते थे कि इस जीवन में हमें सदैव एक विद्यार्थी बने रहना चाहिए ताकि, हम निरंतर कुछ नया सीखते रहें और नए बदलाव लेकर आएँ। निरंतर सीखने की यही आदत और शिक्षण के प्रति जुनून, ही वह गुण हैं जो एक असाधारण शिक्षक की पहचान बनते हैं।

ऐमिटी में अपने शिक्षक/शिक्षिकाओं को लगातार सीखते रहने के लिए प्रेरित करने हेतु हम प्रोफेशनल डेवलपमेंट प्रोग्राम कराते हैं जिसमें ऐमिटी के अनुभवी शिक्षाविदों के अलावा उत्कृष्ट संस्थानों से शिक्षाविदों और विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता है। आप में से बहुतों ने यह ट्रेनिंग की होगी, कुछ नया सीखा होगा और वापस कक्षा में जाकर पढ़ाने के तरीकों के नए प्रयोग किये होंगे और आपको हर बार अपने अंदर एक नई प्रेरणा मिली होगी।

यही शिक्षक सशक्तिकरण शैक्षिक उत्कृष्टता की आधारशिला है। आज ऐमिटी हमारे फाउंडर प्रेसिडेंट के 2047 के विकसित भारत के सपने को जीवंत करने की ओर अग्रसर है और आप सब इसका केंद्र बिंदु हैं, अतः एक जीवनपर्यन्त विद्यार्थी बनिए, लगातार सीखते रहिए, अपनी रचनातमकता को नए पंख दीजिए और सक्षम, सशक्त, आत्मविश्वासी, रचनात्मक एवं दयालु नागरिकों को विकसित कर भारत राष्ट्र के भविष्य के निर्माता बनिए।

अच्छे अंक महत्वपूर्ण हो सकते हैं परंतु वे आपके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण परिचय नहीं हैं

आनंद कुमार पांडेय उत्तर प्रदेश सरकार के 'समग्र शिक्षा' अभियान में गुणवत्ता इकाई में वरिष्ठ विशेषज्ञ/सहायक निदेशक हैं। प्राथमिक और बुनियादी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए बनी विभिन्न रणनीतियों के जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन आप देखते हैं। गत 20 वर्ष से शिक्षा क्षेत्र में आपका योगदान है। आपके अनुसार, सच्ची शिक्षा केवल ज्ञान नहीं देती, वह मनुष्य को संवेदनशील और उत्तरदायी भी बनाती है। ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, विराज खंड, लखनऊ, की छात्रा इशिता चंद्रा, कक्षा 8 ए, ने उनसे विभिन्न पहलुओं पर बात की। प्रस्तुत हैं प्रमुख अंशः

सर, अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में बताइए। आपको शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा कहाँ से मिली?

मेरा बचपन एक छोटे से गाँव में बीता। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो लगता है, तब संसाधन भले सीमित थे लेकिन जीवन अनुभवों और सीखों से बहुत समृद्ध था। तब कोचिंग या डिजिटल संसाधन नहीं थे। गाँव का जीवन बहुत सादगीपूर्ण था। परिवार और समुदाय के साथ मिलकर जीने की संस्कृति थी। वहीं से श्रम, अनुशासन, सामूहिकता और संवेदनशीलता जैसे जीवनमूल्य सीखने को मिले। आज शिक्षा के क्षेत्र में जो भी कार्य करने का अवसर मिला है उसकी प्रेरणा कहीं न कहीं उसी गाँव की पगडंडियों, उन संघर्षों, उन शिक्षकों, और उन अनुभवों से आती है।

छोटी उम्र से ही बच्चों पर प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव डाला जाता है। इस पर आपकी प्रतिक्रिया क्या है?

मैं इस प्रवृत्ति के विरुद्ध हूँ। मेरा मानना है कि आठवीं कक्षा के बाद से ही बच्चों को केवल प्रतियोगी परीक्षाओं की मशीन बनाकर तैयार करना न तो शिक्षा का उद्देश्य है और न ही स्वस्थ समाज की पहचान। यह प्रवृत्ति बच्चों के बचपन, रचनात्मकता और भावनात्मकता के संतुलन को समाप्त कर रही है। माता–पिता और बच्चों के बीच संवाद कम हो रहा है और घर में बातचीत का केंद्र अंक, रैंक और सेलेक्शन बन गया है। यदि बच्चा विज्ञान, गणित या किसी विशेष प्रतियोगिता में औसत है तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह जीवन में असफल हो जाएगा। अभिभावकों को बच्चों पर अनावश्यक प्रतिस्पर्धात्मक दबाव डालने के बजाय इन बातों पर ध्यान देना चाहिए कि वे अन्य बच्चों के साथ नियमित और खुला संवाद करें, उनकी रुचियाँ और क्षमताओं को समझें और खेल, कला, पठन–पाठन और सामाजिक अनुभवों के लिए पर्याप्त अवसर दें।

आज शिक्षा प्रणाली में डिजिटल टूल्स, ऐप्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का चलन बढ़ा है। क्या यह सही है?

आज की शिक्षा में नयी तकनीकों का समावेश आवश्यक तो है लेकिन तकनीक कभी भी शिक्षक, मानवीय संवाद और वास्तविक सीखने का विकल्प नहीं बन सकती। आज जिस प्रकार डिजिटल साधनों, मोबाइल एप्स, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को शिक्षा का केंद्र बनाया जा रहा है वह सावधानी और संतुलन की मांग करता है। यदि तकनीक का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से न किया जाए तो यह शिक्षा को गहराई से समझने की प्रक्रिया के बजाय केवल सूचना प्राप्त करने तक सीमित कर सकती है। तकनीक शिक्षा को सुलभ और प्रभावी बनाती है, लेकिन यह शिक्षक का विकल्प नहीं हो सकती।

युवा पीढ़ी के लिए आपका क्या संदेश है?

जीवन को अंकों, रैंक और प्रतियोगिताओं तक सीमित मत कीजिए। अच्छे अंक महत्वपूर्ण हो सकते हैं पर वे आपके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण परिचय नहीं हैं। अपनी जिज्ञासा को जीवित रखिए, प्रश्न पूछिए, पढ़िए, खेलिए और असफलताओं से सीखिए। टेक्नोलॉजी तेजी से बदल रही है, ऐसे में केवल रटकर सीखना पर्याप्त नहीं होगा। जो सोचने, समझने, सहयोग करने और नए विचार उत्पन्न करने की क्षमता विकसित करेंगे वही आगे बढ़ेंगे। अपनी तुलना दूसरों से नहीं बल्कि अपने कल से कीजिए। जी टी

मोबाइल फोन की आत्मकथा

दर्ष बिंदल, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम
सैक्टर 46, कक्षा 4 डी

नमस्ते! मैं स्मार्टफोन हूँ। मेरा जन्म एक बड़ी फैक्ट्री में हुआ था पर आज आपकी जेब में रहने वाला आपका छोटा और प्यारा दोस्त बन गया हूँ। मैं आपके बहुत काम आता हूँ। मेरे जरिए आप ऑनलाइन क्लास ले सकते हैं और इंटरनेट से नई बातें सीख सकते हैं। मेरे पास एक कैमरा है जिससे मैं आपकी खुशियों को तस्वीरों में कैद कर लेता हूँ। जब आप बोर होते हो, तो मैं आपको गेम्स और कार्टून भी दिखाता हूँ। इसके अलावा आप रिश्तेदारों से वीडियो कॉल भी कर सकते हैं। लेकिन कभी–कभी लोग मेरा गलत इस्तेमाल करते हैं। बहुत देर तक मेरी स्क्रीन देखने से आपकी आँखें थक सकती हैं। कुछ बच्चे पढ़ाई छोड़कर घंटों मुझ पर गेम खेलते हैं, जिससे उनका समय बर्बाद होता है। मैं वरदान हूँ अगर आप मेरा सही इस्तेमाल करें। मुझे जरूरत के समय ही चलाएँ और बाकी समय अपनों के साथ बिताएँ।